वर्ग : XII ; भारतीय इतिहास के कुछ विषय

विषय 1: ईंटें,मनके तथा अस्थियाँ

हड़प्पा सभ्यता

RAKESH KUMAR ; SATYAWANTI H/S
KARISOWA,GAYA

कालरेखा 1

आरंभिक भारतीय पुरातत्व के प्रमुख कालखंड

20 लाख वर्ष (वर्तमान से पूर्व)	निम्न पुरापाषाण
80,000	मध्य पुरापाषाण
35,000	उच्च पुरापाषाण
12,000	मध्य पाषाण
10,000	नवपाषाण (आरंभिक कृषक तथा पशुपालक)
6,000	ताम्रपाषाण (ताँबे का पहली बार प्रयोग)
2600 ई. पू.	हड़प्पा सभ्यता
1000 ई. पू.	आरंभिक लौहकाल, महापाषाण शवाधान
600 ई. पू.–400 ई. पू.	आरंभिक ऐतिहासिक काल

सभी तिथियाँ अनुमानित हैं। इसके अतिरिक्त उपमहाद्वीप के अलग-अलग भागों में हुए विकास की प्रक्रिया में व्यापक विविधताएँ हैं। यहाँ दी गई तिथियाँ हर चरण के प्राचीनतम साक्ष्य को इंगित करती हैं।

कालरेखा 2

हड़प्पाई पुरातत्व के विकास के प्रमुख चरण

उन्नीसवीं शताब्दी

1875	हड़प्पाई मुहर पर कनिंघम की रिपोर्ट

बीसवीं शताब्दी

1921	माधो स्वरूप वत्स द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरंभ
1925	मोहनजोदड़ो में उत्खननों का प्रारंभ
1946	आर.ई.एम. व्हीलर द्वारा हड़प्पा में उत्खनन
1955	एस.आर. राव द्वारा लोथल में खुदाई का आरंभ
1960	बी.बी. लाल तथा बी.के. थापर के नेतृत्व में कालीबंगन में उत्खननों का आरंभ
1974	एम.आर. मुगल द्वारा बहावलपुर में अन्वेषणों का आरंभ
1980	जर्मन-इतावली संयुक्त दल द्वारा मोहनजोदड़ो में सतह-अन्वेषणों का आरंभ
1986	अमरीकी दल द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरंभ
1990	आर.एस. बिष्ट द्वारा धौलावीरा में उत्खननों का आरंभ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :
1.हड़प्पा का उत्खनन किसने किया ?
A.रखल दास बनर्जी B. जॉन मार्शल C.कनिंघम D.दयाराम साहनी Ans. D
2. मोहनजोदड़ो की खोज किसने और कब की ?
A.दयाराम साहनी 1946 B.एन जी मजमुदार 1929 C.राखल दास बनर्जी 1922 D.एसएम व्हीलर 1968
Ans.C
3. सिंधु सभ्यता का कौनसा स्थल मृतकों का टीला के नाम से जाना जाता है?
A.हड़प्पा B.मोहनजोदड़ो C.लोथल Dकालीबंगा
Ans. B
4. हड़प्पा सभ्यता में प्राप्त अवतल चक्की पर की किस पूराविद ने प्रकाश डाला ?
A.औरेल एस्टाइन B.जॉर्ज डेल्स C.एस एम व्हीलर D.अर्नेस्ट मैके
Ans.D
5. सर जॉन मार्शल कौन थे ?
A.साहित्यकार B.पुरातत्ववेता C.कलाकार D.संगीतकार Ans. B
6.भारतीय पुरातत्व का पिता किसे कहा जाता है ?
A.एस एम व्हीलर B.जे एफ जैरिज C. कनिंघम D. एस आर राव Ans.C
7. हड़प्पा सभ्यता किस युग की सभ्यता है ?
A.लौह युग B.ताम्र युग C.कांस्य युग Dस्वर्ण युग
Ans. C
8. सिंधु घाटी के निवासियों को किस धातु का ज्ञान नहीं था?
A. लोहा B.तांबा C.कांसा D.पितल
Ans. A.

9. कालीबंगा कहां स्थित है ?
A.राजस्थान में B.गुजरात में C.पंजाब में D .सिंध में
Ans. A
10. मोहनजोदड़ो किस नदी के किनारे है?
A.रावी B.सिंधु C.सतलज D.झेलम
Ans. B
11. हड़प्पा सभ्यता भारत के किस भाग में विकसित हुई ? A.पूरब में B.उत्तर में C.पश्चिमोत्तर में D.दक्षिण में
Ans. C
12. हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा नगर कौन है? A.मोहनजोदड़ो B.सिंध C.लोथल Dकालीबंगा
Ans. A
13. हड़प्पा सभ्यता में कौन सा स्थान बंदरगाह था?
A.लोथल B.मोहनजोदड़ो C.हड़प्पा D. कालीबंगा
Ans. A
14. लोथल कहां स्थित है ?
A.गुजरात B.राजस्थान C.पंजाब D.पाकिस्तान
Ans. A
15.लोथल किस नदी के किनारे है?
A. ताप्ती नदी B.भोगवा नदी C.सरस्वती नदी D.सतलज नदी . Ans.B
16. हड़प्पा किस नदी के किनारे है ?
A.सरस्वती नदी B.झेलम नदी C.सिंधु नदी D. रावी नदी
Ans. D

17. सर्वप्रथम ईटें कहां से प्राप्त हुई ?
A.हड़प्पा B.मोहनजोदड़ो C.कालीबंगा D. लोथल Ans. B
18. सबसे बड़ा स्नानागार कहां स्थित था ?
A.मोहनजोदड़ो B. हड़प्पा C.कालीबंगा D. रोपड़ Ans. A
19. मृतकों का टीला किसे कहा जाता है?
A. मोहनजोदड़ो B.रोपड़ C.बनवाली D.चंहुनदड़ो Ans. A
20. हड़प्पा सभ्यता में किसकी पूजा की जाती थी ?
A.मातृ देवी B.पशुपति C. चंद्रमा D.पेड़ पौधे Ans. A
21. हड़प्पा सभ्यता में शिल्पकला एवं मूर्तिकला का केंद्र कहां था?
A.कालीबंगा B.लोथल C.रोपड़ Dचंहुनदड़ो Ans. D
22. हड़प्पा सभ्यता में सबसे बड़ा अन्नागार कहां था?
A.हड़प्पा B.मोहनजोदड़ो C.कालीबंगा D.लोथल Ans. B
23. हड़प्पा सभ्यता का आकार कैसा था?
A.त्रिभुजाकार B.चतुर्भुजाकार C.पँचभुजाकार D.वृत्ताकार Ans. A
24.हड़प्पा सभ्यता का काल क्या था ?
A.2500 BC-1700 BC B.2200 BC -1800BC
C.2600 BC -1900 BC D.2200 BC -1750 BC Ans. C
25. हड़प्पा सभ्यता के समकालीन सभ्यता कौन थी ?
A.मेसोपोटामिया सभ्यता B.माया सभ्यता C.चीनी सभ्यता D.मिस्र सभ्यता.
Ans. A

1.प्रश्न : हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगो उपलब्ध भोजन सामग्री की सूचि बनाइए. इन वस्तुओं को उपलब्ध कराने वाले समूहों की पहचान कीजिए.

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगो उपलब्ध भोजन सामग्री की सूचि :

अनाज (अन्न) – गेहूं,जौ,दाल,सफेद चना तथा तिल.

जानवर – भेड़,बकरी,सूअर,वराह ,हिरन तथा मछली.

इन वस्तुओं को उपलब्ध कराने वाले समूह : कृषक(किसान) ; आखेटक समुदाय.

2.प्रश्न :पुरातत्वविद हड़प्पाई समाज में सामाजिक –आर्थिक भिन्नताओं का पता किस प्रकार लगाते है?वे कौन से भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं?

उत्तर : पुरातत्वविद यह जानने के लिए कि क्या किसी संस्कृति विशेष में रहने वाले लोगों के बीच सामाजिक तथा आर्थिक भिन्नताएं थी, सामान्यतः कई विधियों का प्रयोग करते हैं:

1.शवाधान.

2.विलासिता की वस्तुओं के उपयोग.

वे सभी प्रकार के भिन्नताओं पर ध्यान देते है और यह पता लगाने का प्रयास करते हैं कि व्यक्ति का समाज में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर क्या है.इसके द्वारा समाज का वर्गीकरण भी सम्भव हो पाता है.

3. प्रश्न :क्या आप इस तथ्य से सहमत है कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली ,नगर –योजना की ओर संकेत करती है ?अपने उत्तर के कारण बताइए.

उत्तर : हड़प्पा शहरों की सबसे अनूठी विशेषताओं में से एक ध्यानपूर्वक नियोजित जल निकास प्रणाली था। यदि आप निचले शहर के नक्शे को देखें तो आप यह जान पाएंगे कि सड़कों तथा गलियों को लगभग एक ग्रीड पद्धति से बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थी ।

ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया था और फिर उनके अगल- बगल आवासों का निर्माण किया गया था। यदि घरों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ना था तो प्रत्येक घर की कम से कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था।

4.प्रश्न : हड़प्पा सभ्यता में मनकें बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूचि बनाइए. कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए.

उत्तर : मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों की विविधता उल्लेखनीय है : कार्नीलियन (सुंदर लाल रंग का,पीले रंग का) जैस्पर,स्फटिक , क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर ,तांबा,कांसा तथा सोने जैसी धातुऐं तथा शंख ,फ़यांस और पक्की मिट्टी.

पुरातत्वविदों द्वारा किए गए प्रयोग ने यह दर्शाया है कि कार्नीलियन का लाल रंग ,पीले रंग के कच्चे माल तथा उत्पादन के विभिन्न चरणों में मानकों को आग में पकाकर प्राप्त किया जाता था.पत्थर के पिंडों को पहले अपरिष्कृत आकारों में तोड़ा जाता था और फिर बारीकी से शल्क निकाल कर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता था.घिसाई ,पौलिश और इनमें छेद करने के साथ ही यह प्रक्रिया पूरी होती थी.

5.प्रश्न : मोहनजोदड़ो की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए .

उत्तर :संभवतः हड़प्पा सभ्यता का सबसे अनूठा पहलू ,शहरी केंद्रों का विकास था ।आइए ऐसे हीं एक केंद्र मोहनजोदड़ो को और सूक्ष्मता से देखते हैं।हालांकि मोहनजोदड़ो सबसे प्रसिद्ध पुरास्थल है ,सबसे पहले खोजा गया स्थल हड़प्पा था ।

बस्ती दो भागों में विभाजित है एक छोटा लेकिन ऊंचाई पर बनाया गया और दूसरा कहीं अधिक बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया। पुरातत्वविदों ने इन्हें क्रमशः दुर्ग और निचला शहर का नाम दिया है ।दुर्ग की ऊंचाई का कारण यह था कि यहां की संरचनाएँ कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी थी। दुर्ग को दीवार से घेरा गया था जिसका अर्थ है कि इससे निचले शहर से अलग किया गया था।

निचला शहर भी दीवार से घेरा गया था ।इसके अतिरिक्त कई भवनों को ऊंचे चबूतरो पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थे ।अनुमान लगाया गया है कि यदि एक श्रमिक प्रतिदिन एक घन मीटर मिट्टी ढोता होगा तो मात्र आधारों को बनाने के लिए ही चालीस लाख श्रम दिवसों अर्थात बहुत बड़े पैमाने पर श्रम की आवश्यकता पड़ी होगी।

अब कुछ और देखिए ।एक बार चबूतरो के यथास्थान बनने के बाद शहर का सारा भवन -निर्माण कार्य चबूतरो पर एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित था। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि पहले बस्ती का नियोजन किया गया था और फिर उसके अनुसार कार्यान्वियन ।नियोजन के अन्य लक्षणों में ईटें शामिल है जो भले ही धूप में सुखाकर अथवा भट्टी में पकाकर बनाई गई हो, एक निश्चित अनुपात की होती थी, जहां लंबाई और चौड़ाई ऊंचाई की क्रमशः चार गुनी और दोगुनी होती थी। इस प्रकार की ईंटें सभी हड़प्पा बस्तियों में प्रयोग में लाई गई थी।

नालों का निर्माण

मोहनजोदड़ो शहरों की सबसे अनूठी विशेषताओं में से एक ध्यानपूर्वक नियोजित जल निकास प्रणाली था। यदि आप निचले शहर के नक्शे को देखें तो आप यह जान पाएंगे कि सड़कों तथा गलियों को लगभग एक ग्रीड पद्धति से बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थी ।ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया था और फिर उनके अगल- बगल आवासों का निर्माण किया गया था। यदि घरों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ना था तो प्रत्येक घर की कम से कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था।

गृह स्थापत्य

मोहनजोदड़ो का निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है ।इनमें से कई एक आंगन पर केंद्रित था जिसके चारों ओर कमरे बने थे । संभवतः आंगन , खाना पकाने और कताई करने जैसी गतिविधियों का केंद्र था ,खासतौर से गर्म और शुष्क मौसम में। यहां एक अन्य रोचक पहलू लोगों द्वारा अपने एकान्तता को दिया जाने वाला महत्व था ।भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियां नहीं है। इसके अतिरिक्त मुख्य द्वार से आंतरिक भाग अथवा आंगन का सीधा अवलोकन नहीं होता है।

हर घर का ईटों के फर्श से बना अपना एक स्नानघर होता था जिस की नालियां दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थी ।कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने हेतु बनाई गई सीढ़ियों के अवशेष मिले थे। कई आवासों में कुएं थे जो अधिकांशत एक ऐसे कक्ष में बनाए गए थे जिसमें बाहर से आया जा सकता था और जिनका प्रयोग संभवतः राहगीरों द्वारा किया जाता था। विद्वानों ने अनुमान लगाया है कि मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग 700 थी।

6.प्रश्न : हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाइए तथा चर्चा कीजिए कि ये किस प्रकार प्राप्त किये जाते होंगे .
उत्तर : हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची : कार्नीलियन (सुंदर लाल रंग का,पीले रंग का) जैस्पर,स्फटिक , क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर ,तांबा,कांसा तथा सोने जैसी धातुऐं तथा शंख ,फ़यांस और पक्की मिट्टी इत्यादि.

शिल्प उत्पादन के लिए कई प्रकार के कच्चे माल का प्रयोग होता था। हालांकि कुछ, जैसे कि मिट्टी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध थे, कुछ अन्य जैसे पत्थर ,लकड़ी तथा धातु, जलोढ़ के मैदान से बाहर के क्षेत्र से मंगाने पड़ते थे ।बैल गाड़ियों की मिट्टी से बने खिलौने के प्रतिरूप संकेत करते हैं कि यह सामान तथा लोगों के लिए स्थल मार्गो द्वारा परिवहन का एक महत्वपूर्ण साधन था। संभवतः सिंधु तथा इसकी उप नदियों के बगल में बने नदी मार्ग और साथ ही तटीय मार्गों का भी प्रयोग किया जाता था।

हड़प्पा वासी शिल्प उत्पादन हेतु माल प्राप्त करने के लिए कई तरीके अपनाते थे। उदाहरण के लिए उन्होंने नागेश्वर और बालाकोट में जहां शंख आसानी से उपलब्ध था ,बस्तियां स्थापित की। ऐसे ही कुछ अन्य पुरास्थल थे -सुदूर अफगानिस्तान में शोतुरघई जो अत्यंत कीमती माने जाने वाले नीले रंग के पत्थर लाजवर्द मणी की सबसे अच्छे स्रोत के निकट स्थित था तथा लोथल जो कार्नेलियन(गुजरात में भड़ौच) ,सेलखड़ी (दक्षिणी राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात से)और धातु (राजस्थान से) के स्रोतों के निकट स्थित था।

कच्चा माल प्राप्त करने के लिए एक अन्य नीति थी - राजस्थान के खेतड़ी अंचल (तांबे के लिए)तथा दक्षिण भारत (सोने के लिए) जैसे क्षेत्रों में अभियान भेजना। इन अभियानों के माध्यम से स्थानीय समुदायों के साथ संपर्क स्थापित किया जाता था ।इन इलाकों में यदा-कदा मिलने वाली हड़प्पाई पुरावस्तुएं ऐसे संपर्कों के संकेतक हैं ।खेतड़ी क्षेत्र में मिले साक्ष्यों को पुरातत्वविदों ने गणेश्वर - जोधपुरा संस्कृति का नाम दिया है ।इस संस्कृति के विशिष्ट मृदभांड हड़प्पाई मृदभांडों से भिन्न थे तथा यहां तांबे की वस्तुओं की असाधारण संपदा मिली थी ।ऐसा संभव है कि इस क्षेत्र के निवासी हड़प्पा सभ्यता के लोगों को तांबा भेजते थे।

7. प्रश्न :चर्चा कीजिए कि पुरातत्वविद किस प्रकार अतीत का पुननिर्माण करते हैं.

उत्तर :जैसा कि हमने देखा है हड़प्पाई लिपि से किस प्राचीन सभ्यता को जानने में कोई मदद नहीं मिलती। बल्कि ये भौतिक साक्ष्य हैं जो पुरातत्वविदों को हड़प्पाई जीवन को ठीक प्रकार से पुननिर्मित करने में सहायक होते है। ये वस्तुऐं -मृदभांड ,औजार ,आभूषण ,घरेलू सामान हो सकती है ।कपड़ा, चमड़ा ,लकड़ी तथा सरकंडे जैसे जैविक पदार्थ सामान्यतः सड़ जाते हैं, विशेष रुप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में ।जो वस्तुएं बच जाती है वे हैं -पत्थर, पक्की मिट्टी तथा धातु।

यह भी याद रखना आवश्यक है कि केवल टूटी हुई अथवा अनुपयोगी वस्तुएं ही फेंकी जाती थी ।अन्य वस्तुएं संभवतः पुनः चक्रित की जाती थी ।परिणाम स्वरूप जो बहुमूल्य वस्तुएं अक्षत अवस्था में मिलती है या तो वे अतीत में खो गई थी या फिर संचयन के पश्चात कभी दोबारा प्राप्त नहीं की गई थी ।अन्य शब्दों में कुछ खोजें प्रारूपिक के बजाय संयोगिक होती है.

पुरावस्तुओं की पुनः प्राप्ति पुरातात्विक उद्यम का आरंभ मात्र है।इसके बाद पुरातत्वविद अपनी खोजों को वर्गीकृत करते हैं ।वर्गीकरण का एक सामान्य सिद्धांत प्रयुक्त पदार्थों ;जैसे- पत्थर ,मिट्टी ,धातु ,अस्थि ,हाथी दांत आदि के संबंध में होता है ।दूसरा और अधिक जटिल उनकी उपयोगिता के आधार पर होता है : पुरातत्त्वविदों को यह तय करना पड़ता है कि उदाहरणतः कोई पुरावस्तु एक औजार है या एक आभूषण है या फिर दोनों अथवा अनुष्ठानिक प्रयोग की कोई वस्तु ।

पुरातात्विक व्याख्या की समस्याएं संभवतः सबसे अधिक धार्मिक प्रथाओं के पुनर्निर्माण के प्रयासों में सामने आती है ।आरंभिक पुरातत्वविदों को लगता था कि कुछ वस्तुऐं जो असामान्य और अपरिचित लगती थी संभवतः धार्मिक महत्व की होती थी । इनमें आभूषणों से लदी हुई नारी मृणमूर्तियां जिनमें से कुछ के शीर्ष पर विस्तृत प्रसाधन थे, शामिल हैं। इन्हें मातृदेवियों की संज्ञा दी गई थी। पुरुषों की दुर्लभ पत्थर से बनी मूर्तियां जिनमें उन्हें एक लगभग मानकीकृत मुद्रा में एक हाथ घुटने पर रख बैठा हुआ दिखाया गया था। जैसा कि "पुरोहित राजा" को भी इसी प्रकार वर्गीकृत किया गया था। अन्य दृष्टान्तों में संरचनाओं को अनुष्ठानिक महत्व का माना गया है। इनमें विशाल स्नानागार तथा कालीबंगन और लोथल से मिली वेदियाँ सम्मिलित है

8. प्रश्न : हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किए जाने वाले संभावित कार्यों की चर्चा कीजिए.

उत्तर: हड़प्पाई समाज में जटिल फैसले लेने और उन्हें कार्यान्वित करने के संकेत मिलते हैं।उदाहरण के लिए हड़प्पाई पूरावस्तुओं में असाधारण एकरूपता को ही लें जैसा कि मृदभांड हो मुहरो, बांटो तथा ईटों से स्पष्ट है। महत्वपूर्ण बात यह है कि ईटें जिनका उत्पादन स्पष्ट रूप से किसी एक केंद्र पर नहीं होता था जम्मू से गुजरात तक पूरे क्षेत्र में समान अनुपात की थी। हमने यह भी देखा है कि अलग-अलग कारणों से बस्तियां विशेष स्थलों पर आवश्यकतानुसार स्थापित की गई थी।इसके अतिरिक्त ईटें बनाने और विशाल दीवारों तथा चबूतरों के निर्माण के लिए श्रम संगठित किया गया था.

पुरातत्वविदों ने मोहनजोदड़ो में मिले एक विशाल भवन को एक प्रसाद की संज्ञा दी परंतु इससे संबद्ध कोई भव्य वस्तुएं नहीं मिली है।एक पत्थर की मूर्ति को पुरोहित राजा की संज्ञा दी गई थी और यह नाम आज भी प्रचलित है।

कुछ पुरातत्वविद इस मत के है कि पड़प्पाई समाज में शासक नहीं थे तथा सभी की सामाजिक स्थिति समान थी। दूसरे पुरातत्वविद यह मानते हैं कि यहां कोई एक नहीं बल्कि कई शासक थे जैसे मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि के अपने अलग-अलग राजा होते थे कुछ और यह तर्क देते हैं कि यह एक ही राजा तथा जैसा कि पुरावस्तुओं में समानता ,नियोजित बस्तियों के साक्ष्य, ईटों के आकार में निश्चित अनुपात तथा वस्तुओं के कच्चे माल के स्रोतों के समीप स्थापित होने से स्पष्ट है।अभी तक की स्थिति में अंतिम परिकल्पना सबसे सुसंगत प्रतीत होती है क्योंकि यह कदाचित संभव नहीं लगता कि पूरे के पूरे समुदायों द्वारा इकट्ठे ऐसे जटिल निर्णय लिए तथा कार्यान्वित किए जाते होंगे।